अभिनन्दन पत्र

साकार के साचें में स्वरूप को ढालने वाली, आकार के मनोरथ को रूप देने वाली, निराकार की अभिव्यन्जना का प्रतिरूप बनने वाली, विधाता के विधान की गति को वेग देने वाली, यज्ञ के इरादों को आयाम देने वाली, वैराग्य की पराकाष्ठा को अन्तस में समाने वाली, सत्य की मशाल में ईमानदारी की ज्योति जगाने वाली, रोम–रोम में प्रभू प्रेम का राग भरने वाली, पवित्रता के पथ पर शुचिता के कदम रख हर मंजिल फतेह करने वाली, श्री श्री की हर श्रीमत को सिर माथे रख श्रेष्ठतम् शिखर पर आरूढ़ होने वाली, संकल्पों को मधुरता की मधुरिमा में भिगो शब्दों की तासीर में माधूर्य घोलने वाली, सिद्धान्तों की परिधि पर जीवन के हर प्रसंग को प्रेरक दर्पण बना इतिहास रचने वाली, त्याग एवं तपस्या के आधार पर साधना के सर्वोत्तम मुकाम पर आसीन हो जय घोष करने वाली, अनन्त की यात्रा में अहर्निशं परिव्राजक **आदरणीय दादी जानकी जी** हम सब उत्तर प्रदेश के भाई बहन आपकी इबारत के आगे नतमस्तक हो आपकी इबादत करते है। आपका 330916108 बार अभिवादन एवं अभिनन्दन करते है। आपका शुभ अभिनन्दन, शुभ अभिनन्दन, शुभ अभिनन्दन ।

जिस दौर में नारी सहस्र बंदिशों की वेदना में जीवन जीने के लिए मजबूर थी, उस काल में आपने सदियों की बेड़ियों को तोड़ न सिर्फ आध्यात्म के सूर्य के प्रकाश से अन्तःकरण के तिमिर को दूर किया, बल्कि सैकड़ों देशों के जन मानस में बैठे विकारों की हर कलुषित कालिमा को परिष्कृत कर उज्ज्वल बना कर नियति से तकदीर–ए–इकबाल कर दिया। आपने अपने पुरूषार्थ के मूलमंत्र से न सिर्फ हजारों वर्षों की मान्यताओं में भटकती विचारधारा को मंजिल का स्थायित्व दिया, बल्कि उर्जावान व्यक्तित्व से हर आयु में भी जीत का जज्बा पैदा कर दिया। किसी का पथानुगामी बनने के बजाए तपश्चर्या का उज्जवल पथ दिखा, विलासिता में डूबी पश्चिमी संस्कृति को तसव्वुफ का संदेश दे जश्न–ए–जिन्दगी के अभिप्राय की तदवीर दिखा दी, आधुनिकता के आवरण में खुशियों का पैकेज तलाशती आधुनिक मानसिकता में परमात्म प्यार का जो अनुग्रह किया है वा अकथनीय ही नहीं अकल्पनीय है। आपने अपने जीवन के 82 वर्ष भगवान के भागीरथ कार्य में भागीरथी बन 2500 वर्षों की मलिन मन की मलीनता का परिशोधन कर स्वर्णिम संसार के लिए आत्मा का जो कायाकल्प कर कंचन बना रही हैं वह काबिल–ए–तारीफ ही नहीं इबादत योग्य है।

दादी जी ये बहार–ए–चमन यज्ञ आपकी रहनुमाई एवं सेवा भावना से सदा ही गौरान्वित होता रहेगा, कि हमारे आश्रय में एक ऐसा देवदूत है जिसका निवेश बेनूर में भी आफताब का अक्श दिखा रहा है, दादी जी ये आध्यात्म जगत तो क्या समस्त संसार आपकी अहर्निशं तामील का ऋणी है और सदा ही रहेगा। ये गुल्जार–ए–चमन कानपुर भी अपने नसीब पर गर्व कर रहा है, कि आज उसे एक ऐसी बेनजीर शख्सियत का अनुग्रह प्राप्त हुआ, जो करिश्माई हूर ही नहीं खुदाई नूर है और नूर–ए–इलाही से ये इल्तिजा कर रहा है कि आप यूँ ही सदा विकास की इबारत लिखती रहें।

आज इस मुबारक मौके पर हम सभी भाई–बहन भरे भाव से, खुले हृदय से, निर्मल मन से, नतमस्तक हो आपका आभार करते हैं, आपको बाअदब लाखों लाख सलाम करते हैं, हम सभी उत्तर–प्रदेश के भाई–बहन एवं समस्त ब्राह्मण परिवार की दिली तमन्ना है, कि आप सदा निरामय हो, हम सबकी दुआएं लम्बी उम्र के रूप में आपको मिलें, आपकी पालना जनमानस में आध्यात्म की उर्जा का प्रवाह करती रहे। आप दिन दूना रात सहस्र गुना परमात्म प्रत्यक्षता के साथ स्वर्णिम संसार के नव निर्माण की सफलता की मंजिलें हासिल करती रहें । आपको बहुत – बहुत – बहुत – बहुत – बहुत आभार ।

इनायत ये नूर–ए–इलाही की हैं,
करामत ये जहान–ए–माली की हैं
अमानत ये खुदा–ए–डाली की है,
सोचो तो सही.. 2 ... विधाता की ये कैसी अनमोल कृति है ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं.....।।

विलायत की दहलीज पर, इबारतें लिखने वाली,
विनायक बन सिद्धियों की, विरासत देने वाली,
सोचो तो सही..2 ... परीक्षाओं के वक्त भी कैसी डेल्टा वृति है ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं.....।।

कौड़ी बिना विदेश में, तामीर खड़े किये,
अंग्रेजी बिना अंग्रेजियत में, देव संस्कार भर दिये,
सोचो तो सही..2 ...बिना डिग्रियों के कैसी बेजोड उस्तानी है ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं.....।।

पुरूषार्थ की रफ्तार में, बस इश्क है हकीकी,

अन्दाज योगियों के संग, इनका सदा फकीरी,

सोचो तो सही...2 ... मौलाई मस्ती की क्या बेजोड़ हस्ती है ।।

ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं....।।

वाणी पर जिनकी सरस्वती, साक्षात चल रही हैं,

खुदाई तासीर में डूबे लफजों की, बरसात कर रही है,

सोचो तो सही..2 ...परवरदिगार की कैसी अद्भुत कलाकृति हैं ।।

ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं.....।।

वैराग की बुलन्दियॉ चढ़, चैतन्य कोहिनूर बन गई,

102 बसंत के बाद भी, खुदाई नूर गढ़ रही ,

सोचो तो सही..2 ...बेनूर को कैसे हूर में बदलने की पृवति है।।

ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं.....।।

दिल के हर अल्फाज में, बस खुदाई इल्म है,

मन के हर आलेख में बस, मुरलियों की नज्म है,

सोचो तो सही..2...रब की रहनुमाई में कैसी अजीम अभिव्यक्ति है ।।

ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी हैं.....।।

ब्र. कु. सुमन

जानकीपुरम लखनऊ

27.02.18